संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X
UGC Approved
Impact Factor 2.978

शोध दिशा

41

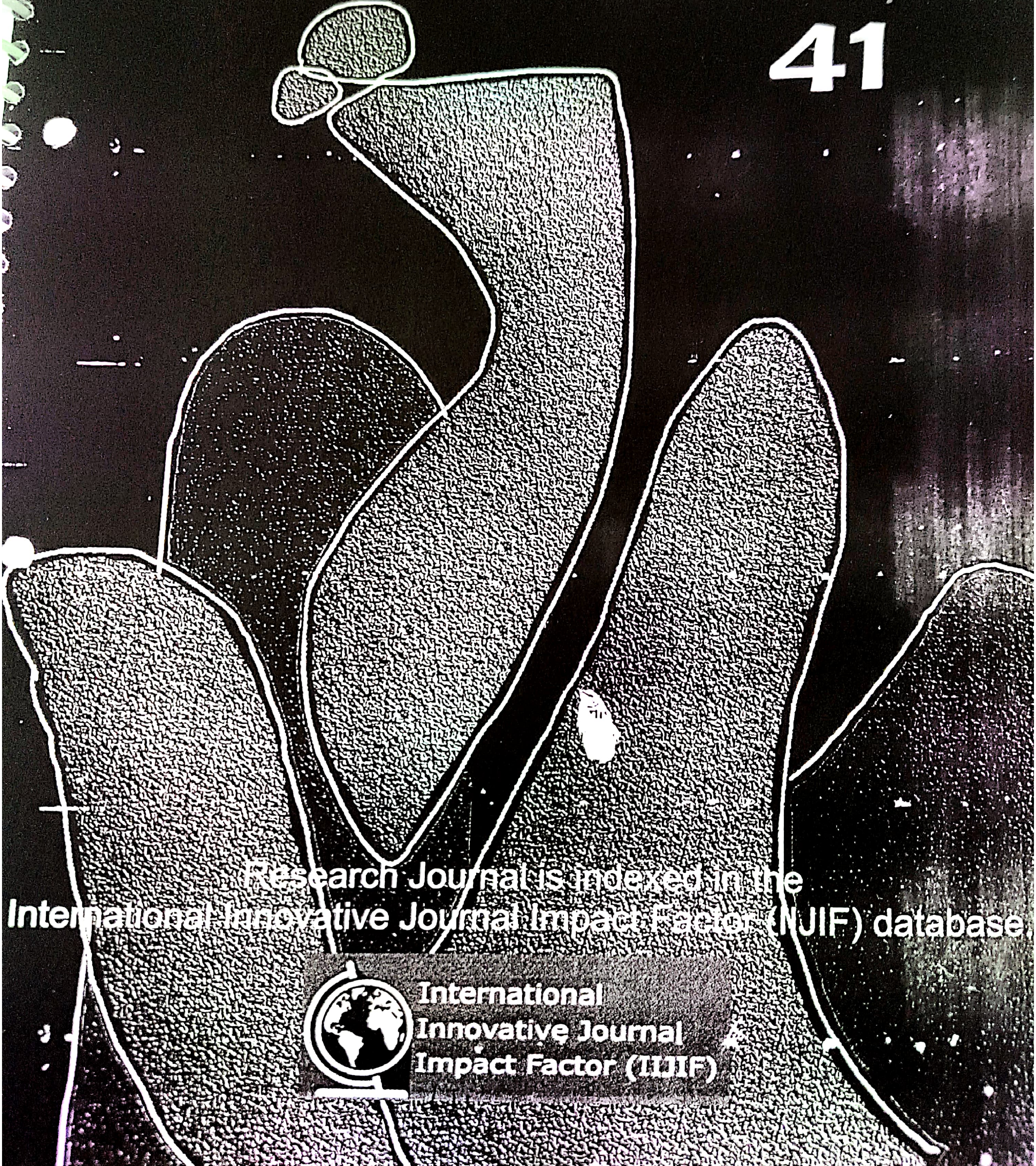

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिका

शोध अंक 41 जून 2018 200.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिव कला
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
फोन : 09560554612

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ॰ रश्मि त्रिवेदी

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन : व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : छह सौ रुपए
यह प्रति : दो सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

ISSN 0975-735X

42

अनुक्रम

हिंसा का राजनीति से जुड़ा पहलू/ संपादकीय 9

हिंदी की बाल-कविता का इतिहास बचपन एक समंदर के बहाने/ **कृष्ण 'शलभ'** 15

सूरदास की कृष्ण-भक्ति/ **रामेश्वर कांबोज 'हिमांशु'** 49

समकालीन लघुकथा : शिल्प और भाषा/ **डॉ॰ अशोक भाटिया** 56

ममता कालिया कृत 'दुक्खम सुक्खम' में व्यक्त समाज/ **प्रो॰ शर्मिला सक्सेना** 70

उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों की अनिवार्यता/ **डॉ॰ वीरेंद्रसिंह बर्त्वाल** 77

रीतिकाल के संदर्भ में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की साहित्येतिहास दृष्टि/ **अमृतकुमार** 82

रेखाचित्र-साहित्य में प्रभाकर माचवे का योगदान/ **डॉ॰ गीतासिंह** 87

भक्तिकालीन हिंदीकाव्य में सामाजिक समन्वय व समरसता : वर्तमान समाज की आवश्यकता/ **डॉ॰ कविता मीणा** 94

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी : सरस्वती पत्रिका/ **डॉ॰ मेवालाल यादव** 100

मुक्तिबोध : रचना-प्रक्रिया में भावों का आभ्यंतर संपादन/ **ओप्रकाश शर्मा** 107

समकालीन आर्थिक परिदृश्य की दृष्टि से 'मय्यादास की माड़ी' एवं 'ढाई घर' का तुलनात्मक विश्लेषण/ **प्रीति चौहान** 116

व्यक्ति नाम : मानव-जीवन के विविध पहलुओं के प्रतिबिंब/ **राकेशनारायण द्विवेदी** 122

विश्वकल्याण एवं भारतीय ज्ञान-परंपरा/ **डॉ॰ कविता भट्ट** 129

शिवमंगलसिंह 'सुमन' के काव्य में प्रेमभाव/ **डॉ॰ अलका प्रचंडिया** 139

हिंदी हाइकु में जीवनमूल्यों के समसामयिक संदर्भ/ **डॉ॰ कुँवर दिनेशसिंह** 145

विष्णु प्रभाकर के नाटकों में चित्रित मनोवैज्ञानिक समस्या/ **डॉ॰ पोपट विट्ठल कोटमे, प्रा॰ दादासाहेब नारायण डांगे** 153

मंजुल भगत के साहित्य में नारी के विविध रूप/ **प्रो॰ सुचित्रा मलिक, मोना शर्मा** 161

विद्यापति के काव्य के भावपक्ष के सौंदर्य पक्ष का विश्लेषण 'विद्यापति वैभव' के संदर्भ में/ **डॉ॰ दीप्ति** 164

ISSN 0975-735X

43

विद्यापति के काव्य के भावपक्ष के सौंदर्य पक्ष का विश्लेषण 'विद्यापति वैभव' के संदर्भ में

डॉ॰ दीप्ति

हिंदी साहित्य के महान पंडित विद्यापति उत्तर भारत के प्रसिद्ध गीतकवि के रूप में विख्यात हैं। विद्यापति एक ओर जहाँ हिंदी साहित्य के वीरगाथाकाल का प्रतिनिधित्व करते हैं तो दूसरी ओर हिंदी में भक्ति की परंपरा के प्रवर्तक हैं। आदिकाल की अंतिम कड़ी के जनकवि विद्यापति के चिंतन की मणिरश्मियाँ सौंदर्यबोध, शृंगार-वर्णन, भक्ति-भावना, प्रकृति-चित्रण, समकालीन मिथिला संस्कृति एवं जनजीवन उनके काव्य में सजीव हो उठे हैं।

प्रसिद्ध विद्वान डॉ॰ रामसजन पांडेय ने प्रतिभासंपन्न कवि विद्यापति के व्यक्तित्व और कृतित्व पर 'विद्यापति वैभव' पुस्तक में प्रकाश डाला है। प्रस्तुत शोधपत्र में 'विद्यापति वैभव' के संदर्भ में विद्यापति की कृतियों के भावपक्ष का मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयास है।

'विद्यापति वैभव' में सृजनात्मक व्यक्तित्व के स्वामी विद्यापति की तीन भाषाओं—संस्कृत अवहट्ठ तथा मैथिली भाषा में रचित रचनाओं पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृत भाषा में रचित उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—भू-परिक्रमा, पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, शैवसर्वस्वसार, शैव-सर्वस्वसार-प्रमाणभूत-पुराणसंग्रह, गंगावाक्यावली, विभागसार, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, गयापत्तलक, वर्षकृत्य, मणिमंजरी। अवहट्ठ भाषा में रचित 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका' वीरकाव्य उनकी ख्याति का आधार बने। मैथिली भाषा में विद्यापति द्वारा रचित पद आते हैं, जो 'विद्यापति पदावली' के नाम से अभिहित हैं। यह रचना विद्यापति की कीर्ति का आधार है। इन रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने 'गोरक्षविजय' नामक एक एकांकी नाटक भी लिखा है। इस प्रकार विद्यापति ने हिंदी साहित्य को बेजोड़ रचनाएँ प्रदान कर साहित्य की श्रीवृद्धि में बहुमूल्य योग दिया है।

कोमल एवं भावुक हृदय का स्वामी कवि सौंदर्य का साधक होता है और अपनी साधना रूप-सौंदर्य की अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में करता है। एच॰एच॰ परखूरष्ट के अनुसार, 'कला का मुख्य ध्येय अपने शब्दों के माध्यम से विश्वजनीन संघर्ष को प्रतिध्वनित करना है। वह प्रत्येक वस्तु सुंदर है, जो किसी सफल माध्यम के सही प्रयोग से उत्पन्न होती है, जो उसे व्यक्त करता है।" कवि विद्यापति की रचनाओं में सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति स्पष्टतः परिलक्षित है! 'विद्यापति वैभव' में सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति मानवीय रूपवर्णन तथा प्रकृति के रूपवर्णन द्वारा की गई है। मानवीय रूप-सौंदर्य वर्णन के अंतर्गत राधा की नासिका, ग्रीवा, भौंह, केश, उरोज, कटि तथा वाणी आदि का चित्रण है। राधा के रूपवर्णन में उनकी प्रसिद्ध रूढ़ियों के आश्रय में अभिजात्य परिलक्षित है। उदाहरणस्वरूप इन्होंने राधा के मुख के लिए चंद्र, अधर के लिए बिंबाफल तथा

ISSN 0975-735X

44

में उपमा का यश केवल कालिदास को प्राप्त है। यदि किसी द्वितीय व्यक्ति का नाम लेना हो तो किसी को विद्यापति के नाम पर आपत्ति नहीं होगी। विद्यापति की राधा सौंदर्य-समूह की चित्रपटी है।'[2] विद्यापति की सुंदर राधा के निर्माण में जैसे विधाता ने सारे संसार का सौंदर्यसार लगा दिया है। वह जिधर से निकलती है, लोगों के अंतस में पुलक-प्रीति पैदा करती है और मन-प्रसन्न बनाती है–

देख-देख राधा-रूप अपार।
मनमथ कोटि मंथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर।[3]

विद्यापति ने अपने काव्य में राधा के शारीरिक सौंदर्य पर ही नहीं, अपितु भावपक्ष के सौंदर्य पर भी प्रकाश डाला है। राधा के दो रूपों–स्वकीया और परकीया का विवेचन करते समय वह उनके भावनात्मक सौंदर्य को प्रस्तुत करते हैं। 'उनकी राधा में भावानुभावों की ही प्रधानता है। उनके अनावृत प्रेम में वासना की तृष्णा और रसिकता, कथन में सरलता, सहजता, निश्चलता और सहज अपनत्व, विद्युच्छवि, स्वर्णाभा तथा कमनीयता, प्रियतम की अराधना में शुचिता, समर्पणशीलता, त्यागमयता, विह्वलता तथा एकनिष्ठता है।'[4]

प्रकृति के कुशल चितेरे विद्यापति ने अपने काव्य में प्रकृति के आलंबन तथा उद्दीपन दोनों रूपों का वर्णन किया है। परंतु उन्होंने प्रकृति के आलंबन रूप का कम तथा उद्दीपन रूप का अधिक वर्णन किया है। प्रकृति का विराट वैभव उनकी कलम से सजा-सँवरा है। आलंबनगत प्रकृति रूप के चित्रण में बसंत का रूप द्रष्टव्य है–

आएल ऋतुपतिराज बसंत।
धाओल अलिकुल माधवि-पंथ।
मौलि रसाल-मुकुल भेल ताथ ।
समुखहि कोकिल पंचम गाय।[5]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यापति की सौंदर्य-दृष्टि अधिक उदार, उदात्त और विशाल रही है। उनका सौंदर्यबोध मानव, प्रकृति तथा भावों के गहरे लोक तक व्याप्त है। विद्यापति की राधा अनुपम तथा अद्भुत सौंदर्य की स्वामिनी हैं। विद्यापति द्वारा राधा की सहृदयता, संवेदनशीलता तथा भावुकता इत्यादि के वर्णन में भावसौंदर्य उत्कृष्ट बन पड़ा है परंतु राधा के कायिक रूपवर्णन में ऐंद्रियता एवं मांसलता कहीं-कहीं देखने को मिलती है। विद्यापति के प्राकृतिक सौंदर्य-वर्णन के अंतर्गत आलंबन की अपेक्षा उद्दीपनगत चित्रण ही प्रधान रहा है, परंतु प्रकृति की मनोहर और मंजुल क्रीड़ाओं का भावविभोर वर्णन आकर्षक बन पड़ा है।

विद्यापति के काव्य में राधा-कृष्ण का आलंबन-आश्रय लेकर शृंगार के दोनों पक्षों–संयोग तथा वियोगपक्ष की अभिव्यक्ति है। संयोग शृंगार के अंतर्गत राधा और कृष्ण के रूपसौंदर्य, उनके पारस्परिक प्रेम, प्रथम मिलन और पुनः मिलन इत्यादि का सजीव अंकन है। कृष्ण और राधा के राजपथ पर प्रथम साक्षात्कार का बहुत सुंदर चित्र प्रस्तुत है–

चलल राजपथ दुहु अरुझाई।
कह कवि शेखर दुहु चतुराई।[6]

इस प्रकार प्रथम साक्षात्कार में ही कृष्ण-राधा एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होकर निहारते

45

हैं। विद्यापति का वियोग श्रृंगार बेजोड़ बन पड़ा है। 'विद्यापति-वैभव' में वियोग श्रृंगार के चारों भेदों—पूर्वराग, मान, प्रवास तथा करुण का मार्मिक वर्णन हुआ है। पूर्वराग में कृष्ण और राधा की पीड़ा, वेदना तथा मान में कृष्ण और राधा के मानी रूप के साथ-साथ नायिका की निराशा व वेदना की भी अभिव्यक्ति है। प्रवास में कृष्ण के मथुरा जाने के बाद व्यथित राधा की व्याकुलता, करुणा एवं दुःख की मार्मिक अभिव्यक्ति परिलक्षित है। विद्यापति के विरहगीतों में 'करुणा' की भावना दृष्टिगोचर होती है। विद्यापति के विरह-वर्णन में विरह की ग्यारह दशाओं—अभिलाषा, चिंता, स्मरण, गुण-कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मूर्च्छा तथा मरण दृष्टिगोचर होते हैं। कृष्ण के विदेश जाने के पश्चात् राधा के प्रलाप की दशा का उदाहरण प्रस्तुत है—

अनुखन राधा-राधा रटइत, आधा-आधा बानि।
राधा सयँ जब पुनतहिं माधव-माधव सयं तब राधा।[7]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रेम के पारखी विद्यापति ने संयोग श्रृंगार वर्णन के अंतर्गत जहाँ राधा और कृष्ण की प्रेम लीला के सुंदर, ऐंद्रिय, मधुर और मनोरम चित्र रेखांकित किए हैं, वहीं वियोग श्रृंगार करुणा, पीड़ा, तीव्रता, व्यापकता एवं भावुकता चित्रण के द्वारा महान बन गया है। अतः विद्यापति का श्रृंगार-वर्णन हिंदी साहित्य में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

हिंदी साहित्य में कृष्णकाव्य-परंपरा के प्रवर्तक विद्यापति कृष्ण के दिव्य रूप की स्तुति करते हुए उनके जगन्नाथ रूप से संसार-सागर से पार करनेवाले कृपालु मानते हुए प्रार्थना करते हैं—

माधव बहुत मिनति कर तोय।
तुहु जगत जगन्नाथ कहाओसि जग बाहिर नहिं दार।[8]

विद्यापति कृष्ण के अपरूप तथा दिव्य रूप के साथ ही उनके 'रसिक-शिरोमणि' रूप में उनकी लीलाओं का बहुत मनोयोग से वर्णन करते हैं। विद्यापति के कृष्ण चाहे आलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण हैं, परंतु राधा से अलग होने पर 'विरही' प्रेमी की तरह राधा के वियोग में सारे सुख-ऐश्वर्य को निस्सार मानते हुए कहते हैं—

राहि रहल दुर हमें मथुरापुर, एतहु सइए परान।
वह कवि सेखर अनुभवि जन लो, बड़क बड़ई पिरीत।[9]

विद्यापति के काव्य में राधा का परम सुंदरी, मनमोहक मुग्धा और प्रणयिनी रूप भी रेखांकित है। कवि ने कृष्ण के विदेश जाने के पश्चात् विरह से व्याकुल तथा बेचैन राधा की मार्मिक एवं करुण मनोदशा का सजीव चित्रण किया है। 'प्रकृति का कण-कण उसे दाहक प्रतीत होने लगता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी सखी से कह उठती है—

सखि हे हमारि दुखेर नहिं ओर।
कंत पाहुन कामदारुण सघन खर सर हंतिया।[10]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यापति के काव्य में आलौकिक एवं दिव्य सौंदर्यसंपन्न कृष्ण नारायण नहीं, बल्कि साधारण नायक का पर्याय हैं, जो परम सुंदर, रसिक तथा राधा के अनन्य प्रेमी हैं और समाज की कठोर रूढ़ियों के विरोधी हैं। इसी प्रकार विद्यापति की राधा आलौकिक सौंदर्य, माधुर्य, पवित्रता, त्याग व समर्पण की भावना तथा निष्कपट एवं एकनिष्ठ प्रेम की सफल अभिव्यक्ति हैं।

46

नायक-नायिका की प्रेम-लीलाओं और क्रीड़ाओं का लौकिक रूप मिलता है। उनके प्रेम-वर्णन में ऐंद्रियता, मांसलता, कामोद्दीपकता इत्यादि विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें शृंगारी कवि ही मानना चाहिए।

प्रकृति आदिकाल से मानव की सहचरी रही है। आदिकाल से आज तक मानवीय हृदय को आनंद और उल्लास से परिपूर्ण करनेवाली प्रकृति के सुंदर दृश्यों को सुकोमल हृदयवाला रचनाकार अवश्य कलमबद्ध करता है। सुमित्रानंदन पंत लिखते हैं, 'प्राकृतिक सौंदर्यस्थल का सौंदर्यबोध, एकांतप्रियता दोनों ही तत्त्व मेरी समझ में, मनुष्य को अपनी सौंदर्यदृष्टि को सृजन प्रक्रियाओं द्वारा रूपरेखाओं, ध्वनि छंदों में सँवारने की ओर अग्रसर करते हैं।"[11] विद्यापति के काव्य में दोनों बातें स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। उनके काव्य में प्रकृति के कई रूप दृष्टिगोचर होते हैं– आलंबनगत, उद्दीपनगत, आलंकारिक, पृष्ठभूमि-निर्माण, मानवीकरण, प्रतीक-विधान के रूप में, प्रकृति-वर्णन की साहित्यिक रूढ़ियों और कवि-प्रसिद्धियों का मेल, आंगिक सौंदर्याभिव्यक्ति के माध्यम रूप में। प्रकृति-प्रेमी विद्यापति ने अपने वर्णन में चारुता तथा चेतनता लाने के लिए अचेतन पर चेतन का आरोप भी जमकर किया है। यहाँ बसंत-वर्णन का उदाहरण प्रस्तुत है–

नृप-आसन नव पीठत पात।
कांचन कुसुम छत्र धरु माथ।
किंसुक लवंगलता एक संग।
हेरि सिसिर रितु आगे दल भंग।[12]

प्रस्तुत पंक्तियों में मानवीकरण रूप में प्रकृति-वर्णन अत्यंत सुंदर एवं प्रभावशाली बन पड़ा है।

अतः कहा जा सकता है कि प्रकृति-वर्णन में विद्यापति की निरंतर जागरूकता तथा संवेदनशीलता परिलक्षित है। विद्यापति का प्रकृति का नैसर्गिक सौंदर्य-वर्णन श्रेष्ठ बन पड़ा है। कवि द्वारा प्रकृति के उद्दीपन रूप के चित्रण में नवीन आकर्षण की उद्भावना बहुत महत्त्वपूर्ण है। निःसंदेह विद्यापति के काव्य में प्रकृति सजीव, मधुर एवं भव्य रूप में प्रस्तुत हुई है।

मिथिला भाषा के वाल्मीकि के रूप में प्रसिद्ध विद्यापति का मिथिला संस्कृति के प्रति भी विशेष लगाव रहा है। उनके काव्य में मैथिल संस्कृति की संपन्नता भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। टी॰एस॰ इलियट का मत है, 'संस्कृति की अभिव्यक्ति किसी विशिष्ट समाज की सामाजिक परंपराओं, संस्थाओं और उसके साहित्य तथा कला में होती है।"[13] दर्शन में विभिन्न संस्कारों के समूह को ही संस्कृति के नाम से अभिहित किया जाता है। विद्यापति के काव्य में विभिन्न संस्कारों, जन्म संस्कार, नामकरण, जन्मपत्री, विवाह, विविध देवी-देवता की भक्ति तथा विविध विश्वासों में, पुर्नजन्म, झाड़-फूँक तथा जंत्र-मंत्र, नजर लगना, पर्दाप्रथा तथा सतिप्रथा तथा बलि इत्यादि का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त विभिन्न शुभावसरों पर मिथिलावासियों में विविध वाद्ययंत्रों में ढोल, मंजीरा, वीणा, सारंगी, मृदंग, रबाब, मुरली, शंख, घंटा आदि का प्रयोग होता था तथा नृत्य-गान का भी आयोजन होता था। इसके साथ ही विद्यापति ने मिथिला की नारियों के वस्त्राभूषणों के साथ ही पुरुष के वस्त्राभूषणों एवं शृंगार-सामग्री का भी उल्लेख किया है। तत्कालीन मिथिलावासियों के मनोरंजन के साधनों–जलक्रीड़ा, रास आदि का उल्लेख भी मिलता

ISSN 0975-735X

47

है।

विद्यापति के काव्य में मिथिला संस्कृति प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। निःसंदेह, कहा जा सकता है कि विद्यापति मैथिल संस्कृति के प्रभावशाली एवं उज्ज्वल रूप को उद्घाटित करते हैं। विद्यापति की रचनाओं में भारतीय संस्कृति की आत्मीयता, भावपूर्ण एवं व्यापक वर्णन मिलता है। इनके काव्य में लोकसंस्कृति की संपृक्तता भी इन्हें तत्कालीन कवियों से अलग महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

अतः 'विद्यापति-वैभव' के भावपक्ष के अवलोकन के पश्चात् निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यापति का काव्य भक्ति एवं शृंगार रूपों से संबंधित है। हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम उन्होंने ही कृष्णकाव्य का गायन किया तथा पदशैली के प्रवर्तक रूप में जहाँ कृष्णकाव्य का मार्ग प्रशस्त कर सूरदास तथा अन्य कवियों का मार्गदर्शन किया। उनके काव्य में समाहित शृंगारपरक सुकोमल भाव-सामग्री रीतिकालीन कवियों की प्रेरणा बनी। तत्कालीन समय के सफल कवि विद्यापति की रचनाओं में भाव-मधुरिमा, कल्पना तथा साहित्यिकता का अद्भुत समन्वय है। कालजयी विद्यापति के व्यापक भावपक्ष में तन्मयता, भावमयता तथा गहन अनुभूतियों की सशक्त अभिव्यक्ति उनके सामर्थ्य की सशक्त द्योतक है।

संदर्भ

1. डॉ० यश गुलाटी, हिंदी के श्रेष्ठ काव्यों का मूल्यांकन, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1969, पृ० 35
2. डॉ० रामसजन पांडेय, विद्यापति-वैभव, शब्द सेतु प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ० 35
3. वही, पृ० 36
4. वही, पृ० 38
5. डॉ० यश गुलाटी, हिंदी के श्रेष्ठ काव्यों का मूल्यांकन, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1969, पृ० 44
6. डॉ० रामसजन पांडेय, विद्यापति-वैभव, शब्द सेतु प्रकाशन, दिल्ली 2017, पृ० 43
7. वही, पृ० 53
8. वही, पृ० 56
9. वही, पृ० 58
10. वही, पृ० 61
11. सुमित्रानंदन पंत, मैं क्यों लिखता हूँ, सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड-6, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1980, पृ० 238
12. डॉ० रामसजन पांडेय, विद्यापति-वैभव, पृ० 82
13. उद्धृत, कन्हैयासिंह, हिंदी सूफीकाव्य में हिंदू संस्कृति का चित्रण और निरूपण, भारती भंडार, इलाहाबाद 1973, पृ० 4

पत्नी डॉ० साहिल साहनी
19 ई कालेज लेन
रानी का बाग
अमृतसर, पंजाब 143001
मो० 9501077702

ISSN 0975-735X

48